आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम

- जनवादी कविता
- भूमंडलीकरण की कविता

संपादक : डॉ. अनिल पाटील
प्रा. सुधाकर इंडी

अनुक्रम

जनवादी कविता

1. साठोत्तरी हिंदी कविताओं में सामाजिक विमर्श 15
डॉ. भास्कर उमराव भवर

2. जनवादी चेतना के कवि : डॉ. चंद्रकान्त देवताले 19
प्रा. डॉ. गजानन भोसले

3. जनवादी कविता (साठोत्तरी युग) 24
प्रा. निलम भोसले

4. जनवादी कवि 'धूमिल' के काव्य में राजनीतिक व्यंग्य 31
प्रा. संगीता विष्णु भोसले

5. 'सदियों का संताप' में चित्रित दलित जीवन की त्रासदी 'ठाकुर का कुआँ' 36
डॉ. देवीदास बोर्डे

6. नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य 44
डॉ. साईनाथ विट्ठल चपळे

7. जनवादी कवि नागार्जुन : 'तुमने कहा था' कविता के सन्दर्भ में..... 48
प्रा. नंदू चव्हाण

8. मानवता मुक्ति का रौद्र स्वर 51
डॉ. सुनिल महादेव चव्हाण

9. नयी कविता के प्रतिमान 58
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

10. आधुनिक हिंदी कविता के विविध आयाम जनवादी कविता के विशेष संदर्भ में... 62
प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

11. जनमानस का व्यंग्य चित्रित करने वाले कवि नागार्जुन 68
प्रा. डॉ. संजय चोपड़े

12. जनकवि नागार्जुन एक संक्षिप्त मूल्यांकन 72
प्रा. नरेंद्र संदीपान फडतरे

13. धूमिल की जनवादी कविता 76
प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड

14. डॉ. सुशीला टाकभौरे की प्रतिनिधि कविताओं में स्त्रीवादी चेतना 82
श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे
प्रा. धनंजय शिवराम घुटुकडे

9

नयी कविता के प्रतिमान

प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम

पौराणिक और धार्मिक प्रतीकों का प्रचुर किन्तु सटीक प्रयोग करके नयी कविता यदि परंपरा प्रियता दिखा रही है तो नये संदर्भ में प्रतीकार्थ प्रस्तुत कर प्रगति का द्‌वार भी खोल रही है। जगदीश गुप्त की 'नयी कविता' पत्रिका से एक नये काव्य आंदोलन का आरंभ हुआ। यहाँ से नयी कविता का दौर आरंभ होता है। कविता के अभिव्यक्ति पक्ष के अंतर्गत भाषा, शैली, बिम्ब, प्रतीक आदि आते है। जिन्हें परंपरागत समीक्षाशास्त्र में कलापक्ष कहा गया है किंतु नयी कविता या साठोत्तरी कविता बदली हुई रचनाप्रकिया और रूपाकृति को लेकर चली है इसलिए साठोत्तरी कवी मानते है कि इस काव्य का मूल्यांकन परंपरागत काव्यशास्त्र से नहीं होना चाहिए। नयी कविता के शिल्प विधान में भाषा, बिम्ब और प्रतीक का विशेष महत्त्व है। अतः शिल्प के इन तीन अंगो के आधार पर नयी कविता का विवेचन प्रस्तुत है।

नयी कविता की भाषा –शैली : अभिव्यक्ति के लिए भाषा प्रमुख और शक्तिशाली माध्यम है। भाषा जितनी सक्षम होती है। अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उतनी ही सशक्त होती है। युग की नवीन आवश्यकताओं के कारण नयी कविता या साठोत्तरी कवियों ने भाषा को नया संस्कार देने का प्रयास किया है। काव्य भाषा के विषय में नयी कविता या साठोत्तरी कवियों के अनेक मत है। धर्मवीर भारती के मतानुसार "भाषा भाव की अनुगामिनी रहनी चाहिए" उनके मतानुसार भाषा का सौंदर्य अभिव्यक्ति पर निर्भर है। कवि अज्ञेय ने साठोत्तरी कविता में भाषा की प्रयोगशीलता का महत्त्व बताते हुए कहा है कि 'आज के कवि की प्रवृत्ति काव्य की और साधारण बोलचाल की भाषा के भेद को मिटा देना है। काव्य की भाषा अलग होती है या होनी चाहिए यह वह नहीं मान सकता।'

भवानी प्रसाद मिश्र के विचार भी कुछ इसी प्रकार के है। वे कविता की भाषा को यथासंभव बोलचाल के करीब देखना चाहते है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और रघुवीर सहाय की कोशिश भी काव्य भाषा को बोलचाल के निकट लाने की रही है। अतः स्पष्ट है कि नयी कविता या साठोत्तरी कवियों की भाषा बोलचाल